पृष्ठभूमि

कोरोना महामारी ने भारत में जीवन के लगभग हर क्षेत्र को प्रभावित किया है। COVID-19 के कारण संक्रमण, बीमारी और मृत्यु, देश की पहले से ही नाजुक स्वास्थ्य प्रणालियों पर अभूतपूर्व बोझ डाल रही है। SARS CoV-2 और इसके प्रकारों को समझने से संबंधित अनुसंधान की तीव्र गति और COVID-19 को रोकने, निदान और उपचार करने के लिए विकसित दृष्टिकोणों को न्यूज़ मीडिया में विस्तार से रिपोर्ट किया जाता है, जिससे महामारी के बारे में लोगों की समझ में सुधार करने में मदद मिलती है।

जहां COVID-19 पर काफी समाचार मीडिया कवरेज देखी गई है, वहीं यक्ष्मा (टीबी) जिस पैमाने पर देश को प्रभावित करता है, उस पर असमान रूप से अपर्याप्त ध्यान दिया जाता ह। टीबी को मानव जाति के लिए सबसे पुरानी बीमारी माना जाता है, और इससे हर साल भारत में लगभग 25 लाख से अधिक लोग प्रभावित होते हैं। टीबी पर COVID-19 के छिपे हुए लेकिन भीषण प्रभाव की पड़ताल और रिपोर्टिंग पर ज़्यादा ध्यान नहीं दिया गया है। यह वैश्विक प्रवृत्ति को दर्शाता है जहां कोरोना महामारी की ओर प्रतिक्रिया ने टीबी सेवाओं और उन तक पहुंच में कमी देखी गई है , जिसके परिणामस्वरूप दुनिया भर में टीबी निदान और उपचार में 20% की गिरावट आई है।

वैश्विक टीबी के मामलों का पता लगाने में 3 महीने की अवधि में औसत 25% की गिरावट (महामारी से पहले पता लगाने के स्तर की तुलना में) अनुमानित अतिरिक्त 190,000 टीबी से मृत्यु का कारण होगा। इससे 2020 में टीबी से होने वाली कुल अनुमानित मौतों की संख्या 1.66 मिलियन यानि कि 16 लाख हो जाएगी। यह 2015 के टीबी मृत्यु दर के वैश्विक स्तर के करीब है और टीबी उन्मूलन के लक्ष्यों की दिशा में की गई प्रगति को एक गंभीर आघात है। कुछ ही महीनों में, COVID-19 महामारी ने टीबी के गुमशुदा मामलों तक पहुँचने में की गई प्रगति को उलट दिया है। पिछले साल मार्च और अप्रैल में राष्ट्रीय टीबी उन्मूलन कार्यक्रम (एनटीईपी) को अधिसूचित किये गए टीबी के मामलो में सार्वजनिक क्षेत्र में 38% और निजी क्षेत्र में 44% तक की कमी आई है।

कोरोना महामारी ने पत्रकारिता समुदाय पर भी विनाशकारी पर प्रभाव डाला है। पत्रकार घटते विज्ञापन राजस्व, वेतन कटौती और बड़े पैमाने पर छंटनी जैसी दिक्कतों का सामना कर रहे हैं। कोरोना महामारी पर लोगों को जानकारी पहुंचाते हुए सबसे आगे खड़े हुए पत्रकार अपनी जान भी गवा रहे हैं और मरने वाले पत्रकारों की संख्या प्रतिदिन बढ़ रही है।

पिछले दस वर्षों में, मामूली समर्थन के सहयोग से, रीच मीडिया फेल्लोस ने लगातार टीबी पर अच्छी तरह से शोध और गहन स्टोरीज लिखी हैं। हमें टीबी पर रिपोर्टिंग के लिए रीच मीडिया फेलोशिप प्रोग्राम के 11वें संस्करण की घोषणा करते हुए खुशी हो रही है, जिसमें इस वर्ष (अंग्रेजी के अलावा) स्थानीय भाषाओं में रिपोर्टिंग करने वाले पत्रकारों के लिए 15 फेलोशिप उपलब्ध हैं। हमने कार्यक्रम को वर्चुअल कार्यशालाओं के माध्यम से समय की जरूरतों के अनुरूप अनुकूलित किया है, लेकिन नियमित ऑनलाइन बातचीत के माध्यम से सीखने के आदान-प्रदान को जारी रखेंगे।

भारत में रहने वाले (अंग्रेजी के अलावा) अन्य स्थानीय भाषाओं में रिपोर्टिंग करने वाले पत्रकार 12 जुलाई 2021 तक अपने संपादक की सहमति के साथ आवेदन पत्र और एक बायोडाटा media@reachindia.org.in पर ईमेल करके आवेदन कर सकते हैं।

फेलोशिप के नियम जानने के लिए कृपया आवेदन पत्र का अंतिम पृष्ठ देखें। आवेदन पत्र यहाँ से डाउनलोड करें। कोई भी सवाल हों, तो 7829546741 पर भी संपर्क कर सकते हैं।